शिक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF
EDUCATION
सत्यमेव जयते

In NIRF 2025 Band 51-100 under the category State Public University

कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ
डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

एवं

भारतीय भाषा समिति
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

एक–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय भाषा परिवार : अवधारणा और शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य

उद्घाटन सत्र

मंगलवार, 23 दिसंबर, 2025 प्रातः 10:00 बजे से

स्थान : सूरकक्ष, क.मुं. हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ

सादर आमंत्रण

कार्यक्रम अध्यक्षता

प्रो. आशु रानी
कुलपति
डॉ भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय
आगरा

मुख्य अतिथि

प्रो. वी. आर. जगन्नाथन
पूर्व निदेशक
मानविकी विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त
विश्वविद्यालय (इग्नू), नई दिल्ली

विशिष्ट अतिथि

प्रो. एस.पी. सिंह
प्राचार्य
सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा

बीज वक्ता

प्रो. रमेश चंद शर्मा
सेवानिवृत्त आचार्य, भाषाविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

विशेषज्ञ वक्ता

प्रो. सुधीर प्रताप सिंह
आचार्य, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली–110068

डॉ. महेश कुमार शर्मा
निदेशक
डी.डी. इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़
देहरादून

डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी
सह आचार्य
अनुसंधान और भाषा विकास विभाग,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

डॉ. पल्लव विष्णु
सह आचार्य, भाषा विज्ञान विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

डॉ. अनीता
सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट, आगरा

डॉ. रवींद्र गोस्वामी
सहायक आचार्य, जी.बी. पोदार कॉलेज,
नवलगढ़, राजस्थान

डॉ. नीलम यादव
सहायक आचार्य (भाषाविज्ञान)
एवं संगोष्ठी संयोजक

प्रो. हेमा पाठक
अधिष्ठाता, कला संकाय एवं
अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग

प्रो. प्रदीप श्रीधर
निदेशक, क.मुं. हिंदी तथा
भाषाविज्ञान विद्यापीठ

आयोजक संस्थाओं के बारे में

डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (पूर्ववर्ती : आगरा विश्वविद्यालय) की स्थापना 1 जुलाई 1927 को उत्साही एवं दूरदर्शी शिक्षाविदों : रेव्रेंड कैनन ए. डब्ल्यू. डेविस, मुंशी नारायण प्रसाद अस्थाना, डॉ. एल.पी. माथुर, लाला द्वार चंद, राय बहादुर आनंद स्वरूप और डॉ. ब्रजेंद्र स्वरूप के अथक प्रयासों से हुई। स्थापना के समय इसका अधिकार क्षेत्र यूनाइटेड प्रोविंसेज ऑफ आगरा, मध्य भारत एवं राजपूताना तक विस्तृत था।

विश्वविद्यालय की मूल पहचान सदैव उत्कृष्टता की खोज, उच्च शैक्षणिक मानकों के प्रति प्रतिबद्धता तथा अनुसंधान को प्रोत्साहित करने की परंपरा रही है। आठ दशकों से अधिक समय में विश्वविद्यालय ने सुदृढ़ शैक्षणिक संस्कृति विकसित की है तथा नैतिक और चारित्रिक मूल्यों को शिक्षा में एकीकृत करने की धरोहर को निरंतर आगे बढ़ाया है।

आज यह विश्वविद्यालय आगरा मंडल के सात जिलों आगरा, अलीगढ़, मैनपुरी, हाथरस, फिरोजाबाद, एटा और मथुरा की शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है। वर्तमान में लगभग 200 संबद्ध कॉलेज और 15 आवासीय संस्थानों और चार प्रमुख परिसरों – पालीवाल पार्क, खंदारी, सिविल लाइंस और छलेसर में संचालित है। अपने आदर्श वाक्य "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की भावना के साथ विश्वविद्यालय ज्ञान, अनुसंधान व नवाचार के पथ पर अग्रसर है।

कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिंदी एवं भाषाविज्ञान विद्यापीठ, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय का एक प्रतिष्ठित एवं ऐतिहासिक संस्थान है, जिसकी स्थापना 14 दिसंबर 1953 को उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल, प्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी की प्रेरणा से हुई। इसकी संकल्पना जनवरी 1953 में लखनऊ में आयोजित उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के सम्मेलन में इस उद्देश्य से की गई कि राष्ट्रभाषा हिंदी की प्रगति तथा समृद्धि के लिए विश्वविद्यालय में एक विशेष विद्यापीठ स्थापित किया जाए, जहाँ हिंदी और अहिंदी भाषी क्षेत्रों के विद्यार्थी एवं विद्वान एकत्र होकर भाषाई विकास में योगदान दे सकें।

विद्यापीठ के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी जी ने कहा था, *"यह केंद्र हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में संवर्द्धित करेगा, आधुनिक भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन का युग प्रारंभ करेगा, तथा हिंदी साहित्य ही नहीं बल्कि विविध भारतीय भाषाओं के साहित्य और अखिल भारतीय साहित्यिक आंदोलनों के अध्ययन को भी प्रोत्साहित करेगा।"*

इसी दृष्टि से जुलाई 1956 से यहाँ औपचारिक अध्यापन कार्य प्रारंभ हुआ। स्थापना के साथ ही विद्यापीठ ने उच्च स्तर के अनुसंधान को बढ़ावा दिया है और हिंदी भाषा एवं साहित्य के साथ–साथ संस्कृत, भाषाविज्ञान, जनसंचार तथा विदेशी भाषाओं के अध्ययन एवं शोध में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। गौरवशाली अतीत, सक्रिय वर्तमान और संभावनाओं से परिपूर्ण भविष्य इन्हीं तीनों का समन्वय इस विद्यापीठ की वास्तविक शक्ति है।

भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा भारतीय भाषाओं के प्रचार–प्रसार हेतु **'भारतीय भाषा समिति'** नामक एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति का गठन दिनांक 15 नवंबर 2021 को किया गया। इस समिति का कार्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में परिकल्पित भारतीय भाषाओं के समग्र और बहु–विषयक विकास के मार्गों की सम्यक जानकारी प्राप्त करना एवं उनके क्रियान्वयन की दिशा में सार्थक प्रयास करना है। समिति को मौजूदा भाषा शिक्षण एवं अनुसंधान को पुनर्जीवित करने और देश में विभिन्न संस्थानों में इसके विस्तार से संबंधित सभी मामलों पर मंत्रालय को परामर्श देने का कार्य भी सौंपा गया है। उच्चाधिकार प्राप्त समिति उसको सौंपे गए कार्यों को करने के लिए उप–समितियों, अध्ययन समूहों की नियुक्ति कर सकती है। यह केंद्र, राज्य सरकार के शिक्षण, अनुसंधान एवं भाषाओं के विस्तार/संवर्धन से संबंधित किसी भी संस्थान के साथ परस्पर संवाद एवं समन्वय भी कर सकती है।

संक्षिप्त कार्यक्रम विवरण

सत्र–1	**(10:30 am - 12:30 pm)**	**उद्घाटन सत्र** भारतीय भाषा परिवार पर दो पुस्तकों का विमोचन
सत्र–2	**(12:30 pm - 01:30 pm)**	भारतीय भाषा परिवार: भाषाविज्ञान में एक नया ढाँचा (पुस्तक 1) और भारतीय भाषा परिवार पर संकलित अध्ययन: दृष्टिकोण और क्षितिज (पुस्तक 2) – पर योगदानकर्ताओं/विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा चर्चा
	(01:30 pm - 02:30 pm)	भोजनावकाश
सत्र–3	**(02:30 am - 04:00 pm)**	दोनों पुस्तक खंडों पर पैनल चर्चा, भारतीय भाषाविज्ञान में भविष्य की दिशा और शोध पत्र प्रस्तुतियाँ
सत्र–4	**(04:00 am - 05:30 pm)**	**समापन सत्र**

संगोष्ठी के बारे में

भारतीय भाषा समिति द्वारा 'भारतीय भाषा परिवार' की अवधारणा पर प्रस्तुत किए गए दो महत्वपूर्ण ग्रंथ, Bharatiya Bhasha Pariwar: A New Framework in Linguistics (भारतीय भाषा परिवार: भाषाविज्ञान में एक नया ढाँचा) और Collected Studies on Bharatiya Bhasha Pariwar: Perspectives and Horizons (भारतीय भाषा परिवार पर संकलित अध्ययन: दृष्टिकोण और क्षितिज) इन दिनों अकादमिक चर्चा में प्रमुखता से स्थान पा रहे हैं। पहली पुस्तक 'भारतीय भाषा परिवार' ने भारतीय भाषाओं के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण वैचारिक अवस्थापना को प्रस्तुत किया है जिसके अनुसार विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच अलगाव स्थिति नहीं बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक और सभ्यतापरक अंत:सूत्र विद्यमान हैं। इस विचार ने भारतीय भाषाविज्ञान में एक नये अध्याय की शुरुआत की है।

'भारतीय भाषा परिवार' की इस नई समावेशी अवधारणा से न केवल भारत की विविध भाषाई परंपराओं के बीच आपसी संबंधों की खोज को अकादमिक रूप से बल मिलने की आशा है बल्कि 'भाषायी एकात्म' के आधार पर भारतीय भाषाओं में अंतर्निहित 'विविधता में एकता' के मूल तत्त्वों के प्रकाश में आने की भी आशा है। इसलिए भारतीय भाषा परिवार के विचार को व्यापक तौर पर सशक्त एवं समर्थ बनाने वाले बौद्धिक उद्यमों को गति देने की आवश्यकता है ताकि निकट भविष्य में हम भारतीय भाषाओं के ऐतिहासिक विकास को इस नई धारणा के आलोक में समझते हुए उनके ध्वनितंत्र, व्याकरण, अर्थविज्ञान और साहित्य आदि में मौजूद पारस्परिक प्रभावों को उद्घाटित करने में सफल हो सकें।

भारतीय भाषाओं के अध्ययन से संबंधित परंपरागत औपनिवेशिक दृष्टिकोण को अनेक कारणों से पुन: जाँचने की आवश्यकता है। पहला यह, कि भारतीय भाषाओं को विभेदमूलक पारिवारिक ढाँचे में वर्गीकृत करने से इनके सही स्वरूप को समझने में क्या विसंगतियाँ और बाधाएँ उत्पन्न हुई हैं? दूसरा यह, कि इससे भाषाओं के बीच की आपसी समझ और संबंध में किस तरह अनावश्यक रूप से जटिलता आई है? तीसरा यह, कि इसकी वजह से कैसे भाषाएँ राजनीतिक दुरुपयोग और दुराग्रह का शिकार हुई हैं? और चौथा यह कि इसकी वजह से भाषाओं के बहुआयामी अकादमिक अध्ययन और अनुसंधान को कितना नुकसान पहुँचा और कैसे बहुभाषी लोकतांत्रिक भारत देश में उसकी अपनी भाषाएँ कमजोर और परस्पर अपरिचित होती चली गई?

भारतीय भाषाओं की निरंतरगामी एवं सह–संबद्ध परंपराओं का उनके सही परिप्रेक्ष्य और सही दृष्टिकोण के साथ पठन–पाठन और अनुसंधान भारत के मुखरित भविष्य की आधारशिला बनेगा, इसमें संदेह नहीं। इसके लिए भारतीय भाषाओं और भाषाविज्ञान के अध्ययन को उपनिवेशवादी दृष्टिकोण से मुक्त करने की जरूरत है। इस परिप्रेक्ष्य में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, भारत की बहुभाषिकता को उसकी विशिष्ट शक्ति के रूप में समुन्नत करने का मार्ग प्रशस्त करती है। भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के नेतृत्व में विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थाओं में आयोजित की जा रही 'भारतीय भाषा परिवार' की अवधारणा विषयक संगोष्ठियों का उद्देश्य भाषाविदों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और नीति विशेषज्ञों को बहुपक्षीय विचार–विमर्श के लिए एकत्रित करना है।

भारतीय भाषा समिति की पहल पर निर्मित दोनों पुस्तकों के आलोक में पढ़ा जा सकता है कि कैसे भारतीय भाषाओं की संरचनात्मक, सांस्कृतिक और संज्ञानात्मक बुनियाद हजारों वर्षों के परस्पर आदान–प्रदान द्वारा अपना आकार ग्रहण करती है और कैसे भारतीय बहुभाषिकता, भारत की विविधता में एकता के भाव को अखंड बनाए रखने में मदद करती है? इन दोनों पुस्तकों के मूल मंतव्य और विविध परिप्रेक्ष्यों पर चर्चा के द्वारा इस बौद्धिक उद्यम के प्रचार–प्रसार में सहायक मिलेगी।

इसी क्रम में डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (पूर्ववर्ती आगरा विश्वविद्यालय) के अंतर्गत संचालित कन्हैयालाल मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ के भाषाविज्ञान विभाग द्वारा (भारतीय भाषा परिवार) की अवधारणा पर केंद्रित एक दिवसीय संगोष्ठी **'भारतीय भाषा परिवार: अवधारणा और शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य'** का आयोजन किया जा रहा है। इस एक दिवसीय संगोष्ठी में भारतीय भाषा परिवार की मूल अवधारणा को स्थानीय शैक्षणिक समुदाय (भाषाविज्ञान एवं अन्य सहगामी विषयों के शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं अन्य बौद्धिक चिंतकों) के समक्ष आधारभूत जानकारी और विचार–विमर्श हेतु प्रस्तुत किया जाएगा। साथ ही, विशेष रूप से इसके शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य, अर्थात् इसके अध्ययन–अध्यापन की आवश्यकता, इसके भावी शैक्षणिक ढाँचे, महत्त्वपूर्ण पाठ्य बिंदुओं, संबंधित पाठ्य सामग्री और आगामी अनुसंधान के क्षेत्रों की पहचान आदि मुद्दों की गहनता के साथ चर्चा की जाएगी।

उल्लेखनीय है कि कन्हैयालाल मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ का भाषाविज्ञान विभाग, भारत के सबसे पुराने भाषाविज्ञान विभागों में से एक है। देश–विदेश में अपने भाषावैज्ञानिक चिंतन और योगदान के लिए प्रतिष्ठित अनेक भाषाविद् इस विभाग और संस्थान से संबंधित रह चुके हैं। हिंदी में भाषाविज्ञान के अध्ययन–अनुसंधान की यहाँ पुरानी परंपरा रही है। इस दृष्टि से, विद्यापीठ के भाषाविज्ञान विभाग का इस महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक पहल के लिए आगे आना स्वाभाविक भी है और प्रासंगिक भी है। चूँकि यह संस्थान (विद्यापीठ) भारतीय भाषाओं के भाषापरक, तुलनात्मक–ऐतिहासिक और साहित्यिक अध्ययन–अनुसंधान के लिए विख्यात रहा है इसलिए भारतीय भाषा परिवार के चिंतन को उद्देश्यपरक ढंग से आगे ले जाने के लिए प्रस्तावित संगोष्ठी (**भारतीय भाषा परिवार: अवधारणा और शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य**) अपना औचित्य सिद्ध करेगी।

भारतीय भाषाओं के भाषावैज्ञानिक, साहित्य, सामाजिक–सांस्कृतिक एवं बहुविषयक अध्ययन–अनुसंधान में रुचि रखने वाले अध्येता इस संगोष्ठी में सहभागिता करने के लिए सादर आमंत्रित हैं।

लक्षित प्रतिभागी

- हिंदी सहित विभिन्न भाषाओं के अध्येता
- भाषाविज्ञान विषय और इसकी विभिन्न अध्ययन शाखाओं के अध्येता
- भाषा–साहित्य एवं समाजविज्ञान के शोधकर्ता
- भाषा अध्ययन विभागों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी
- मानवविज्ञान, संज्ञानात्मक विज्ञान और अनुवाद अध्ययन के विशेषज्ञ
- शिक्षाविद् और पाठ्यक्रम विकासकर्ता
- भाषा–संवर्धन संस्थाओं और सांस्कृतिक–अकादमिक संस्थानों के प्रतिनिधि
- भाषाई अध्ययन और भारतीय ज्ञान परंपराओं में रुचि रखने वाले विद्यार्थी और युवा शोधकर्ता आदि।

उद्देश्य

- भारतीय भाषा समिति **'भारतीय भाषा परिवार'** की अवधारणा पर प्रस्तुत पुस्तकों, Bharatiya Bhasha Pariwar: A New Framework in Linguistics (भारतीय भाषा परिवार: भाषाविज्ञान में एक नया ढाँचा) और Collected Studies on Bharatiya Bhasha Pariwar: Perspectives and Horizons (भारतीय भाषा परिवार पर संकलित अध्ययन: दृष्टिकोण और क्षितिज) के मूल मंतव्य के बारे में अकादमिक जागरूकता और प्रचार–प्रसार।
- भारतीय भाषाओं के एकात्मभाव और समन्वय–सूत्रों से संबंधित शैक्षणिक लेखों का संकलन।
- दोनों पुस्तक खंडों पर समीक्षा, सारांश और विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तैयार करना, इनके प्रमुख निष्कर्षों, शोध निहितार्थों और भविष्य के अध्ययन के लिए सुझाए गए दिशा–निर्देशों को अकादमिक प्रतिनिधियों के समक्ष उजागर करना।
- सम्मेलन चर्चाओं, पत्र प्रस्तुतियों और विशेषज्ञ टिप्पणियों का संकलित दस्तावेज का निर्माण, जिसका भाषायी अनुसंधान और शैक्षिक नीति के संदर्भ के रूप में उपयोग किया जा सके।
- भारतीय भाषाओं, अनुवाद और भाषाई अनुसंधान पर कार्य करने वाले विद्वानों और संस्थानों के बीच अंतरविषयक संपर्क स्थापित करना।
- पुस्तकों के विचारों को शैक्षणिक संस्थानों, मीडिया आउटरीच और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से व्यापक रूप से फैलाना, ताकि भारत की भाषाई एकता और विविधता पर संवाद को प्रोत्साहन मिले।

आयोजन समिति

श्रीमती पल्लवी आर्य, डॉ. राजकुमार, डॉ. केशव कुमार शर्मा, डॉ. शालिनी श्रीवास्तव, नीरव माथुर, सूर्यमणि कुमार, डॉ. गौरव कुमार गौतम, कान्त, अजय, राधा

परामर्श समिति

श्री अनुपम श्रीवास्तव, श्री केशरी नंदन

संपर्क

ई–मेल : kmilinguistics@gmail.com
मोबाइल: 7417890936 (संयोजक), 9411925292, 8958832424, 7870965331 (आयोजन समिति)